Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 1, Issue 1- 2016

गिरते मूल्य–सामाजिक चुनौती एवं शिक्षा की भूमिका

डॉ. चन्द्र प्रकाश पालीवाल*, डॉ. अनुराधा पालीवाल**

भौतिकतावादी व तकनीक के उच्चतम प्रयोग के सूचना क्रांति के इस युग ने विकास की चकाचौंध के साथ–साथ विषम व विषैली परिस्थितियों को भी जन्म दे दिया है। फलस्वरूप मनुष्य के आचरण में जो गिरावट आयी है, उसने सभी प्रबुद्ध विचारकों को चिन्तित कर दिया है। देश का बुद्धिजीवी वर्ग मानव मूल्यों के संकट की स्थिति को लेकर चिन्ताग्रस्त है। मूल्यों के संकट की स्थिति मानव समाज को चुनौती दे रहा है। सामाजिक जीवन में समरसता के स्थान पर विघटन की स्थिति जन्म ले रही है, इन सबके जड़ में मूल्य चेतना का अभाव है। आज का भारतीय पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहा है। सांस्कृतिक संघर्ष के युग में स्वस्थ संस्कृति व मूल्यों का विकास नहीं हो रहा है। ज्यादातर युवा जो तथाकथित संभ्रांत वर्ग से हैं, वे नियमों, आदर्शों व कानून का उल्लंघन करने में हिचकिचाते नहीं हैं। नशे की गिरफ्त में अविवेकी व लापरवाह हो गए हैं, स्वयं की सुविधा के प्रति सचेत और दूसरों की सुविधा को लेकर सम्मान की भावना न के बराबर है। युवाओं की ऊर्जा गलत दिशा में जा रही है। जीवन असहज हो गया है। हम बनावटी मुखौटों के सहारे जीने को बाध्य हो गये हैं, युवा वर्ग में सही दिशा निर्देशों का अभाव है क्योंकि युवा आक्रोश से बचने के लिए माता–पिता संरक्षक व शिक्षक वर्ग ने मौन धारण कर रक्खा है। यह परेशान कर देने वाली स्थिति है।

मानव जीवन के दिशा निर्देश का कार्य मानव के मूल्य करते हैं, मानव की जीवन पद्धति से उसके व्यक्तित्व का निर्धारण किया जा सकता है।

तुलसी और गुलमोहर सींचे हमने घर–घर
लेकिन तुमने द्वार–द्वार पर रोपी नागफनी
हरी भरी फसलों से डोरी सपनों की बांधी
लेकिन तुम मौसम से मिलकर ले आये आंधी

मानव का व्यक्तित्व उसकी पहचान है। भीड़ में अलग दिखाई देना उसकी जीवन शैली के व्यक्तित्व से ही दिखता है। लेकिन संघर्षों की इस प्रक्रिया में मानव भ्रमित हो गया है। भारत ही नहीं पूरा विश्व मूल्य संकट के दौर से गुजर रहा है। जबकि हमारी भारतीय सभ्यता अधिक बौद्धिक, सदाचारी, नैतिकतावादी व आध्यात्मिक उपलब्धियों की दृष्टि से बेजोड़ है। कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी दुश्मन रहा है सदियों दौरे जहाँ हमारा।

हमारे युग की यह विड़म्बना ही है कि लोग आंतरिक सम्पन्नता को महत्व नहीं देते, भौतिक साधनों को सर्वोपरि मानते हैं। भौतिकवाद में आकंठ डूबे लोगों की स्वच्छंदता की पूर्ति मृगतृष्णा के समान है। ऐसे स्वार्थी व ईर्ष्यालु लोगों की अहंकार वृत्ति तुष्टि ने उन्हें विवेक शून्य बना दिया है।

सोशल साइट्स पर स्वयं को सामाजिक सिद्ध करने वाले लोगों के आत्मीय रिश्ते सिकुड़ गये हैं, संकुचित वृत्ति के चलते स्वयं 'अंधाधुंध सोच वाला मार्डन ! कहते हैं।

*प्राचार्य, आर्य महिला शिक्षक, प्रशिक्षण महाविद्यालय, अलवर।
**प्रवक्ता, आर्य महिला शिक्षक, प्रशिक्षण महाविद्यालय, अलवर।
E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

इस मार्डन सोच के चलते मनुष्य के व्यवहार में विकृतियाँ आ गई हैं, जो कि मनुष्य के सभ्य होने पर प्रश्न चिह्न है। आत्मा से दूर मनुष्य एक कुण्ठाग्रस्त पुतला बन गया है, समाज में ऐसे लोगों की भरमार है जो दूसरों की पीड़ा से सुखी होते हैं तथा दुःखी करने की परिस्थितियाँ बनाते रहते हैं। ऐसे लोगों की आत्महीनता की अभिव्यक्ति बहुत ही निम्न स्तर की देखी जाती है जो किसी सभ्य समाज का हिस्सा नहीं है।

दो देशों के मध्य होने वाले युद्ध परिणाम की विभिषिका को हम सभी जानते हैं। तब भी धर्म की आड़ में अपने ईश्वर का, स्वर्ग का आदेश मानकर मानव ही मानव को समूल नष्ट कर रहा है। यह कैसा आदेश ? कैसा धर्म ? कैसी नैतिकता ? कैसा जेहाद ? और कहाँ का मूल्य ? मानव की दुनिया में मानव की जान लेना फिर कौन बचेगा किस पर शासन करेंगे, धर्म के आदेश मानने वाले तथाकथित 'परिपूर्ण महामानव'। आतंकवाद को बढ़ावा देने में आतंकवादी संगठनों ने भोले–भाले युवक–युवतियों को बहला–फुसलाकर उनके मस्तिष्क में धर्म का झूंठा नशा भर दिया है। इस मदमस्त धर्मान्ध नशे को छिन्न–भिन्न करने का एक ही माध्यम है मूल्यों की शिक्षा। शिक्षा के संदर्भ में मूल्य शब्द का अर्थ है समाज और देश के अनुरूप आदर्श नागरिक बनाने हेतु समाविष्ट गुणों तथा आदतों का विकास। मूल्य का अभिप्राय उपयोगिता से है वस्तुओं और विचारों की उपयोगिता। मूल्यों के विकास में परिवार की भूमिका प्रथम होती है। अभिभावक, विशेषकर मॉ बालक की प्रथम शिक्षिका होती है। बालक अपनी माँ से ही संसार एवं जीवन मूल्यों के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है, चाहे वह लड़का हो या लड़की मूल्यों की शिक्षा बराबर दी जानी चाहिए। परिवार के अन्य सम्मान्नीय सदस्यों के द्वारा भी बालकों को प्रारंभ से ही जीवन मूल्यों का बीजारोपण किया जा सकता है। उद्देश्यपरक शिक्षा के द्वारा प्रत्येक बालक को अच्छा एवं तेजस्वी बनाना है, जिससे कि वह मानव जाति के लिए वरदान एवं गौरव बने।

घर, परिवार एवं विद्यालय का वातावरण सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। क्योंकि ''उपदेश का मार्ग विस्तृत है, किन्तु अपना उदाहरण प्रस्तुत करने से वह शीघ्र एवं निश्चित होता है।'' इस दिशा में शिक्षक– अभिभावक सम्बन्धों के बड़े अच्छे परिणाम मिले हैं। ''वर्ष भर विद्यालय के माध्यम से कार्यक्रमों का आयोजन अभिभावक व शिक्षक दोनों मिलकर करें। इससे बालक की सम्पूर्ण ऊर्जा का उपयोग सकारात्मक तरीके से कर, लाभ उठाया जा सकता है।

वर्तमान बिगड़ी हुई नैतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों से बालक को बचाकर आज एक दिशा प्रदान करने की जरूरत है। विश्व की परिस्थितियॉ बड़ी तीव्रता से महाविनाश की ओर बढ़ रही है। इसके लिए भावी पीढ़ी के समक्ष नैतिक एवं आध्यात्मिक प्रकाश को अपनाने की जीती जागती प्रेरणा घर परिवार एवं विद्यालय ही दे सकते हैं।

आज जिस अनुशासनहीनता व उच्छृंखलता के युग से हम गुजर रहे हैं उसके विभिन्न कारणों के पीछे शिक्षण संस्थाओं में सम्यक् मूल्य आधारित नैतिक शिक्षा का अभाव है। प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर दी हुई शिक्षा का बालक के मन पर अमिट प्रभाव पड़ता है। पर दुर्भाग्यवश आज हमारे देश में नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा का प्रश्न बहुत ही जटिल और विवादास्पद बनकर रह गया है। इसका परिणाम हमारे जीवन में बढ़ता असंतोष, अनुशासनहीनता व गिरते जीवन मूल्यों के रूप में देख रहे हैं।

संसार को सद्गुणों व आध्यात्मिक का पाठ पढ़ाने वाले भारत के बच्चे नैतिक मूल्यों से शून्य हो इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है। ऐसे में हमारी शिक्षा व्यवस्था में

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

इनका समायोजन अनिवार्य होना चाहिए। किंतु मूल्यों पर आधारित नैतिक शिक्षा की कोई भी योजना तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक सुचारू रूप से योजनाबद्ध तरीके से क्रियान्वयन न किया जाए।

हमारे प्राचीन स्मृति ग्रन्थों में नीति व आचार की शिक्षा प्रदान करना महत्वपूर्ण रहा है। महाभारत की विदुर–नीति मूल्य की शिक्षा का कोष है। भगवद्गीता कर्म, कर्तव्य का दस्तावेज, रामायण, रामचरित मानस, मर्यादा का सर्वश्रेष्ठ आदर्श है। इसके अतिरिक्त भर्तृहरि के नीतिशतक, सुभाषित संग्रहों की बहुलता संस्कत वाबमय में सुक्त्यात्मक व उपदेशात्मक काव्य भी विद्यार्थियों के लिए यत्र तत्र बिखरे ये मोती हमारे लिए बहुत मूल्यवान है।

''बस अन्त करें मद लोभ, क्रोध, ईर्ष्या असत्य और व्यभिचार

बने मीत कृष्ण–सुदामा से हम, करें ग्रहण श्रेष्ठ गीता का सार''

प्रतिस्पर्धा कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन वर्तमान प्रतियोगी युग में प्रतिस्पर्धा के रूप में विकृतता धारण कर ली। विद्यार्थी व्यक्तिगत क्षमताओं से मजबूत नहीं है। एक दो परीक्षाओं की असफलता से ही वह अवसादग्रस्त हो जाता है और आत्महत्या जैसे कदम उठा रहा है।

विद्यार्थियों से अधिक अभिभावक वर्ग, माता–पिता व विद्यालय के अध्यापकों की मानसिकता को बदलना ज्यादा जरूरी है कि अपने बच्चों को ऊँचे सपनों के लिए ऊँचे पदों की प्राप्ति की प्रतिस्पर्धा में धकेलने की बजाय एक अच्छा मनुष्य बनाने की सोचें और आपका बच्चा जिस स्थिति में है उसे स्वीकार करें। टैगोर की शिक्षा विचारधारा स्पष्ट कहती है कि बालक से आत्मीय संबंध स्थापित होने चाहिए।

मूल्य की शिक्षा प्रदान करना भारतीय शिक्षा पद्धति के लिए सदा से ही विचारणीय विषय रहा है। यही कारण है कि हर युग में यहाँ ऐसे ग्रन्थों की रचना होती रही। हमारी पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में चरित्र की शिक्षा प्रदान करने और उसके गठन के लिए बहुत बल दिया गया है। मूल्य आधारित शिक्षा हमें आज पहले से भी ज्यादा आवश्यक लगने लगी है। देश को मजबूत बनाने के लिए चरित्रवान और अनुशासित नागरिकों की नितांत आवयकता है जिसके लिए जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जानी आवश्यक है, शिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षक अपने छात्रों में सम्यक् व सुन्दर विचारों का संवर्धन कर सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार स्वप्न कभी पूरे नहीं होते और संकल्प कभी अधूरे नहीं रहते।

दीप वही जो जलता रहे

पेड़ वही जो फलता रहे

चट्टान रास्ता रोकेगी, पर आदमी वही

जो चलता रहे।

'आचार्य महाप्रज्ञ'

आज के शिक्षकों की शिक्षकीय अभिवृत्ति और मूल्यों पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। आज उनमें सृजनात्मक चिंतन की कमी तो होती जा रही है, साथ ही साथ शिक्षक बनने का आत्म सम्मान भी घट रहा है। शिक्षकों के गुणवत्तायुक्त कार्यक्रम की योजना सिर्फ कागजों में ही दिखाई देती है। भावी शिक्षकों में समय के प्रति प्रतिबद्धता, अध्यापन के प्रति अभिरूचि और निष्ठा, कर्तव्यबोध, नैतिक आचार–विचार, श्रमशीलता, ईमानदारी, संवेदनशीलता चारित्रिक व्यवहार और श्रेष्ठ चिंतन जैसे मूल्यों के विकास के प्रति शिक्षण संस्थाएं सजग व संकल्पित नहीं है। प्रवेशार्थियों से एक मोटी रकम लेकर उन्हें डिग्री प्रदान करना ही उनका उद्देश्य बन चुका है। देखा जाए तो शिक्षक प्रशिक्षण

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

संस्थानों में स्वयं ही नैतिक मूल्यों की कमी है। यह स्थिति शिक्षण संस्थाओं के लिए प्रश्न चिन्ह है। आज के शिक्षक व विद्यार्थी भारतीय संस्कृति को आत्मसात् करने के बजाए भौतिकता के आकर्षण के पीछे भागते दिखाई देते हैं। अब बदलते सामाजिक परिवेश के अनुरूप आज शिक्षकों का कार्य क्षेत्र और उनकी जवाबदेही चुनौतीपूर्ण बन चुकी है।

शिक्षा के क्षेत्र में उभरते नए आयामों और मानवीय मूल्यों की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए आज शिक्षकों के प्रशिक्षण में गुणात्मक उन्नयन की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की भूमिका इस दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

तुम धरती के भगवान, तुम्हारे चरणों में ईश्वर मिलते हैं।

ऐसे सत्य सिखाना जग को अनाचार जग से मिट जाए

मिटे स्वर्ग की असत् कल्पना शाश्वत सत्य धरा पर आए।

रघुवीर शरण मिश्र

आज मानव मूल्यवादी होने का दिखावा करता है। छल–प्रपंची बन गया। दिग्भ्रमितता की स्थिति बनी हुई है। वर्तमान भी विषम परिस्थितियाँ हमारे अस्तित्व को शर्मनाक बना रही हैं। आने वाली पीढ़ियों के सुखद जीवन को सुनिश्चित करने के लिए मूल्यों की शिक्षा आवश्यक है। नयी शिक्षा नीति में यह स्वीकार किया गया है कि आवश्यक मूल्यों के ह्रास तथा समाज में बढ़ रही कटुता के प्रति अधिक चिन्ता के कारण सामाजिक, नैतिक तथा जीवन मूल्यों को पुनः स्थापित करने के लिए शिक्षा को मूल्योन्मुखी बनाना होगा।

गया कहां पर बता दे, भारत वह पहला जालो जलाल तेरा।

कहां गई तेरी शानौ शौकत, किधर गया वह कमाल तेरा।

आज का मानव कुतर्क तथा तर्कहीन संवाद एवं भौतिक उपयोगिता को ही सब कुछ मानता है। जो जन इस स्वच्छंदता से भरी जीवन शैली पर प्रश्न उठाता है वही जन उनकी अहंकारी वृत्ति के शिकार हो जाते हैं और ऐसे नकारात्मक मूल्यों से युक्त मानवों ने ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सन्देह, कुतर्क व प्रश्न करने प्रारम्भ कर दिये हैं। अर्थात् सदवृत्तियों की जगह दुष्प्रवृत्तियों का प्रसार होता दिखाई दे रहा है। ऐसा नहीं है कि वर्तमान युग में ही ऐसी परिस्थितियॉ व दृश्य उपस्थित है। बल्कि इतिहास में यह स्थिति देखी गई है। लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि दुष्प्रवृतियों को रोकने उनका प्रतिकार करने में शिथिलता से ये दिन दूरी रात चौगुनी बढ़ती जाती है।

उपभोक्ता संस्कृति ने मानव को चिन्तन, मनन, व आत्मानुसंधान से रोका है। यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि तकनीक ने आश्चर्यजनक प्रगति की है लेकिन मानव की दुष्प्रवृत्तियाँ उतनी ही निम्न कोटि कृत्यों से लथपथ है।

जिन महापुरूषों ने मानव सभ्यता को विकास के रास्ते पर चलना सिखाया उनके सामने भी आज से ज्यादा विषम सामाजिक परिस्थितियॉ थी लेकिन उन्होंने अपने आत्मबल से उसका सामना किया और मानव जाति के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने। आज हमारा समाज आत्महीनता से मुक्ति तभी पा सकता है जब वह मर्यादित आचरण को ग्रहण करे और आत्मानुशासन व साधना के माध्यम से ही व्यक्ति समाज और सम्पूर्ण सृष्टि से सामंजस्य बनाकर जीवन को कल्याणकारी बना सकता है। मनुष्य एक बार आत्मबल से स्वयं को शक्ति सम्पन्न कर ले तो राक्षसी वृत्तियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। नकारात्मक की प्रवृत्ति से

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

युक्त मनुष्य प्रत्येक परिस्थिति में समाज व परिवार में अपूर्णता व दोषों को ही देखता है। उसकी दृष्टि प्रत्येक स्थिति, परिस्थिति व जन–मन के प्रति छिद्रान्वेषी होती है। इस प्रकार की नकारात्मक वृति को आन्तरिक साधना से समाप्त कर मानव सभ्यता का विकास किया जाए।

आज शिक्षा व विद्या में सार्थक समन्वय आवश्यक है। सूचनाओं के ढ़ेर को मस्तिष्क में एकत्रित करना सार्थक नहीं है, विवेक युक्त बुद्धि से ही जीवन निर्माण, चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व का निर्माण करने की आवश्यकता है।

तथागत बुद्ध के काल में नए भिक्षुओं ने बुद्ध के समक्ष प्रश्न किया। तथागत आज तक आप के सानिध्य में बहुत कुछ सीखा कृपया एक बात बताएं–जब कभी घोर संकट की घड़ी हो, मन स्थिर न हो हो, चिंताए घेर लेना चाहती हो, जो उपदेश ग्रहण किया है वह साथ देता प्रतीत न होता हो, तब हम क्या करें ?

भगवान बुद्ध बोले ।। अप्प दीपो भवः।।

अर्थात् अपने दीप स्वयं बनो।

अपना प्रकाश स्वयं प्राप्त करो।

इतना कुछ सकारात्मक हुआ फिर भी मानव हृदयों में नकारात्मकता क्यों भरी पीड़ा है ? आज राष्ट्रों को मूल्यों के ह्रास से खतरा अधिक है। सबसे बड़ा संकट मूल्यों को बचाने का है। हमें मूल्य संकट से उबरने के लिए मूल्यों की शिक्षा जन–जागरण के साथ व्यवहारिकता में लाने के कड़े कदम उठाने होंगे। अपने आस–पास की परिधि में उजाला करने वाला दीपक इस बात का प्रमाण है कि अंधेरे (मूल्य संकट) को हटाया जा सकता है। हमें विषमताओं, कठिनाईयों, बाधाओं के बावजूद उत्साह के साथ जीना, बेहतर कल का निर्माण करेंगे। इस विश्वास से जीना ही सच्ची मानवीयता होगी।

हालांकि नैतिक शिक्षा के सूत्रपात के लिए हमारे सामने अनेक बाधाएं है फिर भी यदि इच्छा शक्ति हो तो कोई बाधा, बाधा नहीं रहती, आज जीवन मूल्यों पर आधारित नैतिक शिक्षा को जीवन में उतारने की महती आवश्यकता है।

''वृक्षों की शोभा फल फूलों से होती।

सरिता की शोभा भी कूलों से होती।।

प्यारे बंधुओं यह चिंतन के साथ सोचो।

मानव की शोभा नैतिक मूल्यों से होती।।''

प्राचीन भारतीय संस्कृति की आर्य समाज ने पूजा की है। वेदों का ज्ञान प्रसारित करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती का विचार था कि भारतवासी बिना प्राचीन संस्कृति को अपनाये अपना विकास नहीं कर सकते। उनका नारा था 'वेदों की ओर लौटो।' वेद समस्त ज्ञान के स्त्रोत है। अतः यथा सम्भव उसका अनुकरण किया जाये।

भारतीय संस्कृति की शिक्षा का पूर्णतया प्रसार करने का बलशाली माध्यम आर्य समाज ही रहा है। आर्य समाज की संस्थाएं समाज सुधार एवं ज्ञान प्रसार का कार्य कर रही है। वैदिक धर्म की शिक्षा मानवीय सभ्यता को नैतिक जीवन से परिपूर्ण रखती है।

मानवीय गुणों पर पैनी दृष्टि रखकर शिक्षा का स्वरूप नैतिकता से परिपूर्ण, बुद्धि व विवेक को सदैव मानवता की और उन्मुख करना, यही वैदिक शिक्षा का प्रथम व अन्तिम उद्देश्य है।

यथा

तेजोऽसि तेजोमयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यमयि धेहि।

बलमसि बलमयि धेहि, सहोऽसि सहोमयि धेहि।

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

आयु, धन, प्राण, तेज, बल तथा सहनशीलता जैसे मानवीय गुणों की प्राप्ति हेतु परमपिता से प्रार्थना की जाती थी, कर्तव्यों का पालन 'वसुधैव कुटुम्बकम' के आधार पर होना चाहिए। जिस समाज में कर्तव्यों की अवहेलना की जाती है और केवल अधिकारों पर बल दिया जाता है, वह समाज रसातल को चला जाता है। कर्तव्यों की अवहेलना को आज हम दिन प्रतिदिन हमारे समाज में देख रहे हैं, फिर वह चाहे परिवार के दायित्वों की हो या कार्य क्षेत्रों में व्यवसाय की। बिना कर्तव्य पालन के अधिकारों का कोई महत्व नहीं। नैतिकता किसी व्यक्ति अथवा समाज पर आधारित उन सिद्धान्तों तथा मूल्यों का समुच्चय है जिन्हें वे सही, ठीक (उचित) तथा स्वीकार योग्य व्यवहारों की श्रेणी में लाते हैं।

मनुष्य की सोच में नैतिक प्रदूषण का होना घोर चिन्ता का विषय है। आज देश के सभी वर्ग, व्यवसाय, विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत लोग यह दंश झेल रहे हैं कि हमारे जीवन के नैतिक मानदण्ड गिर गये हैं और निरन्तर गिरावट आ रही है। नैतिक पतन से परिवार, समाज, देश स्तर पर सभी व्यक्ति इससे पीड़ित है और विडम्बना देखिये कि सभी जानते हैं, चर्चा होती है, मिलकर आवाज उठाते हैं, लेकिन स्वयं में परिवर्तन नहीं लाते। आइये हम स्वयं से सुधार का संकल्प लें। एक विद्यार्थी के रूप में अच्छी पुस्तकें, सतसंगति, अनुशासन को बनाकर, एक शिक्षक के रूप में–विद्यार्थी को विवेकपूर्ण, सत्य–असत्य का ज्ञान देकर व स्वयं की व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता, कर्तव्य परायणता के रूप में, अभिभावक के रूप में– अपने बच्चों को संस्कृति व धर्मानुसार शिष्ट व्यवहार सिखाकर, प्रशासक के रूप में– नैतिक मूल्यों के शैक्षिक कार्यक्रम का क्रियान्वयन करके विद्यालय/ महाविद्यालयों में व्यवहार में लाकर पाठ्य सहगामी गतिविधियों से सम्बन्धित कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाकर आदि–आदि ऐसे अनेकों उपाय हैं जिनके द्वारा हम स्वयं उत्साह से परिवर्तन को प्रारंभ करने का संकल्प उठावें। दृढ़ संकल्प, इच्छा शक्ति एवं साहस से व्यक्ति आमूलचूल परिवर्तन लाता है।

साहसी बनो अनिष्ट विघ्न से डरो नहीं।

प्रशंसनीय नर वही, निराश हो कभी नहीं।।

अतः मनुष्य को दृढ़ निश्चयी तथा संकल्पित विचारों का होना चाहिए। कार्य अच्छा हो, मानवीयता के लिए हो, अन्याय के विरूद्ध हो तब फिर डर कैसा ? प्रकृति भी साहसी का साथ देती है।

यजुर्वेद के अनुसार–''आत्मा अमर है और शरीर अन्त में भस्म होने वाला है।''

निश्चित रूप से कहा जाना चाहिए कि जीवन में साहस आवश्यक पहलू है। इसके अभाव में प्राणी मृत्यु तुल्य है। ''स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि ''मात्र बातों से कुछ होने–जाने का नहीं है। जिसके मन में साहस तथा हृदय में प्यार है, वही मेरा साथी बने–मुझे और किसी की आवश्यकता नहीं है।''

विद्यार्थियों का विकास कोई मशीन नहीं करेगी बल्कि अध्यापक तथा विद्यालयी वातावरण द्वारा किया जायेगा। विद्यालयी पर्यावरण, पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी किया है आदि सभी गतिविधियों में भूमिका जन्य परिस्थितियों का निर्माण कर सकते हैं जिससे उनका नैतिक विकास सम्भव हो। शिक्षण पद्धतियॉ अपनानी होंगी। मूल्यों से रहित शिक्षा का कोई अर्थ नहीं है। मानवीय मूल्यों की भावना व संविधान में न्याय आधारित मूल्यों की भावनाओं के विकास पर बल दिया है। समस्त विद्यालयी क्रियाकलापों में नैतिक मूल्यों के विकास को प्रेरित करने वाली परिस्थितियां निर्मित करनी होंगी और विद्यालय के परिवेश को प्रेरणा स्त्रोत बनाना

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

होगा। तभी एक शिक्षक के नाते हम अपनी गरिमामय भूमिका का निर्वाह कर सकेंगे।

अल्बर्ट आइन्सटीन का कथन–'मानव मुक्ति नैतिकता द्वारा ही सम्भव है।'' समाज में मूल्यों का क्षरण होता जा रहा है। हम उन्हें नष्ट होता देख रहे हैं, हमारी युवा पीढ़ी, पश्चिमी संस्कृति के नकारात्मक पक्षों से प्रभावित है और हम भौतिकवादी समाज का अंग बनते जा रहे हैं, ऐसे में मूल्यों की शिक्षा आवश्यक है। हमारे देश की सभ्यता व संस्कृति विश्व की अन्य सभ्यताओं व संस्कृतियों से प्राचीन व सनातन मानी जाती है। वेद, पुराण, उपनिषदों, ग्रन्थों, नीति–शतक, सुक्तियों का साहित्य अथाह और मूल्यवान है। समृद्धता से सम्पन्न मेरे देश की धरती को गौरवमयी बनाने के साथ विषमताओं, बाधाओं के बावजूद एक उत्साह के साथ गिरते मूल्यों को संकट से उबारने का अमृतमयी मार्ग, मूल्यपरक शिक्षा द्वारा ही संभव है। गिरते हुए मूल्यों से उत्पन्न संकट से समाज को उबारने का महत्वपूर्ण समाधान 'मूल्यपरक शिक्षा' है। नई शिक्षा नीति व शिक्षाविद् इस प्रकार की शिक्षा की अतिआवश्यकता महसूस कर रहे हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती के मूल्यों से अनुप्रेरित आर्य संस्था ने इस गंभीर संकट को ध्यान में रखते हुए इस संगोष्ठी का आयोजन कर अपने, सामाजिक दायित्व को निभाने का प्रयास किया है, बुद्धिजीवियों द्वारा मंथन से निकले मोतियों से, बेशकीमती रत्नों से, सुविचारों से नवीन मार्ग प्रशस्त होगा, कल बेहतर होगा, हम बेहतर बना लेंगे। ऐसा मेरा सोचना है, इसी आशा के साथ अन्त में:

जग में ''बस–अन्त'' किया जिसने
ईर्ष्या, मद, लोभ अज्ञान का
वह खेल गया जीवन पारी
बन गया पात्र सम्मान का।
जय हिंद। जय भारत

निष्कर्ष

दुष्प्रवृतियों पर अंकुश लगाने एवं मानव समाज के उत्थान के लिए साहित्य ग्रंथों के सद्विचार, अध्ययन प्रेरणादायी व प्रासंगिक है। समाज में सज्जनता चिंताग्रस्त है और दुर्जनों का दुःसाहस बेहिसाब बढ़ रहा है, यह लोक वेदना का स्वर है। सांस्कृतिक मर्यादाएं टूट रही है, परिवार विघटित हो रहे हैं, माता–पिता का तिरस्कार हो रहा है, सहिष्णुता का अभाव है, असभ्यता हावी हो रही है, पद/ सत्ता की प्राप्ति के लिए घृणित कार्यों को अंजाम देना, परीक्षा में जैसे–तैसे पास होने के लिए **व्यापमं का** ———— घोटाला आज तक शूल बनकर चुभ रहा है। युवा वर्ग असफलताओं से घबराकर अवसादग्रस्त हो जाते हैं। सुख–सुविधाओं की मांगों से संतुष्ट नहीं होते हैं।

प्रसंगवश वर्तमान समाज की परिस्थितियां तुलसी दास, सूरदास जी की परिस्थितियों से कहीं अधिक ठीक है। फिर भी संघर्ष करते हुए लोकमंगल साहित्य की रचना इन महापुरूषों के व्यक्तित्व की दृढ़ता का सर्वोत्तम प्रेरणापुंज है। किसी भी क्षेत्र में उत्कर्ष छूने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, मन की जिज्ञासा, ललक व उत्कंठा न कि भौतिक सुविधाएं।

कोलबर्ग (Kohelberg) (सुप्रसिद्ध मूल्य विशेषज्ञ) के अनुसार बालक मूल्यों को तुरन्त एक साथ ग्रहण नहीं करते वरन् अलग–अलग स्तरों में ग्रहण करते हैं। बालकों को मूल्य शिक्षा के भाषण या उसकी प्रस्तुति एक समान सभी बालकों के सामने नहीं रखनी चाहिए, उसके आयु वर्ग, मानसिक परिपक्वता को ध्यान में रखते हुए अपनी मूल्य शिक्षा विधि को प्रयोग में लाना चाहिए। कोहलवर्ग के मूल्य ग्रहण करने की सात सोपानों की जानकारी सभी शिक्षक प्रशिक्षकों को नहीं है और वे भटकाव की

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

स्थिति में है जिससे सच्चे व सही परिणाम नहीं मिलते।

समाज के सभी सदस्य हमारे साथ ही परिवारजन, वृद्धजन, अध्यापक, दूरदर्शन, समाचार–पत्र, पुस्तकें आदि से अन्तःक्रियाऐं चलती रहती है। ये हमारे नैतिक विकास में योगदान करते हैं। विद्यालयी अनुभव नैतिक विकास को प्रभावित करते हैं। कक्षा में विषयगत अध्ययन पाठ्य वस्तु, शिक्षक का व्यवहार, अन्य साथियों के साथ क्रियाकलाप, प्रार्थना सभा, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कम्प्यूटर कक्ष, संगीत, खेल मैदान, कलात्मक वस्तु निर्माण शाला, भित्ति पत्रिका भ्रमण, समाज सेवा, सुविचार, सुभाषित, आदर्श वचन, विद्यालय के प्राचार्य, अध्यापकों तथा अन्य कर्मचारियों का पारस्परिक व्यवहार अर्थात् समस्त विद्यालयी वातावरण में प्राप्त अनुभव उनके मानसिक, भावनात्मक व क्रियात्मक पक्ष को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार विद्यालय के विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा भूमिकाजन्य परिस्थिति का निर्माण किया जाता है। तभी नैतिक मूल्यों का विकास संभव है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. पी.डी. पाठक / जी.एस.डी. त्यागी– 'उभरते शैक्षिक मुद्दे', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा (यू.पी.)।
2. दिनेश चन्द्र भारद्वाज, श्रीमती आर.के. शर्मा, 'नैतिक शिक्षा शिक्षण', राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
3. श्रीमती आर.के. शर्मा, एस.के. दुबे, 'मूल्यों का शिक्षण', राधा प्रकाशन मंदिर प्रा.लि., आगरा।
4. डॉ. हरगुलाल गुप्त–'महर्षि दयानन्द और उनके अनुवर्ती', डी.ए.वी. कॉलेज, मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्त रोड़, नई दिल्ली–55।
5. 05. एस.एम. चॉद–'स्वामी विवेकानन्द जीवन और विचार', श्याम प्रकाशन, जयपुर।
6. प्रेमपाल शर्मा–'शिक्षा की दुनिया में पसरता अंधेरा' नवम्बर 2016, ''नवनीत''– भारतीय विद्या भवन, मुम्बई।

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.